

प्रवैश स०

नाम श्रीकृष्ण

पत्र सं० १-१६—

ख्लोक सं०—

आद्या: १३०४३

विवरणम् पृष्ठा

ਪੀ. ਏਸ਼ੋ ਗੁ. ਪੀ.੦੦੯੫ ਏਸ਼ੋ ਜੀ.੦੧੦੦੧੦੧੩੨੭-੧੦,੦੦੦

विषयः द्वृमशारदा

二

प्रथमकार रघुनन्दनः

ਅੜਕ ਸੰ. (ਪੰਜੀ) ५८ ਪੰਜਿ ਸੰ. (ਪੜ੍ਹੇ) ੧੦

लिंग: नृ

ભાગ - ૧૦

卷之四

12137





Indira Gandhi National  
Centre for the Arts

तिर्यक वार्ता विधि: ५७६

जगत् मन्त्रिष्ठान् एव अक्षय कीरति वृनदः। अनन्तर्मार्गमारा च विदेश न जद्यया।

दिलजीर्पमारा नामे श्री विदेश विदेश विदेश

दि.  
१३५९

७  
८८८  
५

ଶରୀରକୁ ମାନ୍ୟମାତ୍ରାଙ୍କିତ କରିବାକୁ ପାଇଲା ଯାହା  
କିମ୍ବା ତଥା ଅକ୍ଷରକୁ ଦୂର୍ବଳ କରିବାକୁ ପାଇଲା ଯାହା  
ପ୍ରାଚିତ କିମ୍ବା ମୁଖମାତ୍ର ମୁହଁ ପାଇବାକୁ ଦୂର୍ବଳ କରିବାକୁ ପାଇଲା  
ଏଥାନୋଅମାଟାଗୁଡ଼ା ଗାନ୍ଧିଜୀଙ୍କାରୀ କରିବାକୁ ପାଇଲା  
ଏଥାତା ମହାନା ମଧୁକରଙ୍କରେ ମା ମୁହଁ ଦୂର୍ବଳ କରିବାକୁ  
କରିବାକୁ ମରିଦେବ ମରିଦେଵିଙ୍କରେ ପ୍ରାଚିତ କରିବାକୁ  
ମୁହଁ ଦୂର୍ବଳ କରିବାକୁ

କ୍ରୀତି ମାତ୍ର ଦିନେ ଗମନ  
କେତେ ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର  
ଏହି ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର  
ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର  
ନାଥମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର ମାତ୍ର





କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୧୫ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୧୬ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୧୭ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୧୮ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୧୯ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୨୦ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୨୧ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୨୨ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୨୩ ॥  
କୁଳମାତ୍ରେ ଗତିହୟାଏନ୍ଦ୍ରିୟାଦିତ୍ତଃ । ପିଶାଚାନ୍ଦ୍ରାତ୍ମିଷମଃ ॥ ୨୪ ॥

४४  
त्रायन्ता अस्तवाहन्ता उपर्कु एव चक्रगुणान्तेषान्तिपूर्णीवाणेषु मतीयाः स्वाप्तेह खोमुहं द्वयनां आपोद्वै  
दत्यात्तु प्रभुत्वात् उपर्कु हत्याकारावेसन्त्वये ॥ ३७ ॥ एवं प्रदेशं त्वं लिप्तं गुणं  
वीत्प्राप्तिमुख्यां आज्ञात्तु मत्तिनः सकृद एव देवा अभ्यानात्यक्तमा ॥ गयामियां भवासाद्य गिर्वानां निष्कृतिः हत्या ॥ याऽप्यमायां  
वीत्प्राप्तिमुख्यां आज्ञात्तु मत्तिनः सकृद एव देवा अभ्यानात्यक्तमा ॥ गयामियां भवासाद्य गिर्वानां निष्कृतिः हत्या ॥ याऽप्यमायां  
वीत्प्राप्तिमुख्यां आज्ञात्तु मत्तिनः सकृद एव देवा अभ्यानात्यक्तमा ॥ गयामियां भवासाद्य गिर्वानां निष्कृतिः हत्या ॥ ४८

2

2

6



८८

ग्रन्थालय ने संक्षेप में इसका विवरण किया है। अमरीका के एक विद्युत विभाग ने इसका विवरण दिया है। इसका उल्लेख एवं विवरण निम्नलिखित रूप से है।

শাস্ত্ৰ

মহাকবিশ্ব। ইতি সকল পদে প্রস্তুত ভানুমতালে, প্রথম নবজগনের প্রেরণার জন্ম করা গিয়েছিল মানবত্ব। পিতৃশাংক বিশ্বজীবকে প্রকাশিত করে আসেন মানবত্ব। প্রথম নবজগনের প্রেরণা হল প্রকৃত মুক্তি প্রাপ্তি। প্রথম নবজগনের প্রেরণা হল প্রকৃত মুক্তি প্রাপ্তি। প্রথম নবজগনের প্রেরণা হল প্রকৃত মুক্তি প্রাপ্তি।

三

गथानिवृत्तिप्राप्तदामर्षकविषय | इति संकल्पो विज्ञानादिग्रन्थामार्गस्त्रियोगमध्याद्यार्थः ॥५७॥ एवं क्रीष्णोदित्यः अप्यत नमस्माह्याद्वादेवः । येति ॥ नामा  
ग्रन्थानिवृत्तिप्राप्तदामर्षकविषय | इति संकल्पो विज्ञानादिग्रन्थामार्गस्त्रियोगमध्याद्यार्थः ॥५८॥ एवं क्रीष्णोदित्यः अप्यत नमस्माह्याद्वादेवः । येति ॥ नामा  
ग्रन्थानिवृत्तिप्राप्तदामर्षकविषय | इति संकल्पो विज्ञानादिग्रन्थामार्गस्त्रियोगमध्याद्यार्थः ॥५९॥ एवं क्रीष्णोदित्यः अप्यत नमस्माह्याद्वादेवः । येति ॥ नामा  
ग्रन्थानिवृत्तिप्राप्तदामर्षकविषय | इति संकल्पो विज्ञानादिग्रन्थामार्गस्त्रियोगमध्याद्यार्थः ॥६०॥ एवं क्रीष्णोदित्यः अप्यत नमस्माह्याद्वादेवः । येति ॥ नामा



३८

2

সন্দীপেয়ামপুরুষ বিনাপ্রতি স্মাধা শ্রাদ্ধবর্ষে নে দেশ দূর করিয়ে সহজে। উৎক্ষেপণিসংগ্রহ গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে। ইতি সকলে সম্মান।  
ত্রিপুরামপুরুষ বিনাপ্রতি স্মাধা প্রাপ্তি। উৎক্ষেপণিসংগ্রহ গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে। সমস্ত নথিগুলি।  
যাহা এই প্রতিক্রিয়া বিনাপ্রতি স্মাধা প্রাপ্তি। উৎক্ষেপণিসংগ্রহ গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে। ইতি পূর্বৰ্থ।  
দাম নথিগুলি প্রতিক্রিয়া বিনাপ্রতি স্মাধা প্রাপ্তি। উৎক্ষেপণিসংগ্রহ গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে। ইতি সকলে সম্মান।  
গুরুত্বপূর্ণ প্রতিক্রিয়া বিনাপ্রতি স্মাধা প্রাপ্তি। উৎক্ষেপণিসংগ্রহ গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে।  
কিমৰ্বীন্ন অস্তি ক্ষেত্রসীমা প্রস্তুত নথিগুলি। যথেষ্ট সহজে। গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে। ইতি সকলে সম্মান।  
ক্ষেত্রসীমা প্রস্তুত নথিগুলি। উৎক্ষেপণিসংগ্রহ গোপকরণে; প্রসূত্যায়ঃ স্মানমহৰ্ক্ষিণ্যে। ইতি সকলে সম্মান।

五

୧୦ ଶକ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣମୁଖୀଙ୍କୁ ଯିମୋଟନ / ନିଷ୍ଠୀକାନ୍ତେ ମହାଲ୍ୟା ଏମାତ୍ରେ ଶିଖିଛନ୍ତି ।  
ମହାଲ୍ୟାଙ୍କିରିମାନିକୁ ପାପକାରୀ ହେବାରେ ଅନ୍ତର୍ଭାବରେ ପାପକାରୀ ହେବାରେ  
ଶକ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣମୁଖୀଙ୍କୁ ଯିମୋଟନ / ନିଷ୍ଠୀକାନ୍ତେ ମହାଲ୍ୟା ଏମାତ୍ରେ ଶିଖିଛନ୍ତି ।  
ଶକ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣମୁଖୀଙ୍କୁ ଯିମୋଟନ / ନିଷ୍ଠୀକାନ୍ତେ ମହାଲ୍ୟା ଏମାତ୍ରେ ଶିଖିଛନ୍ତି ।



अपलोद्धमात्रम् यस्मादिनेऽनुभवित्वा अश्वाहि भूष्यते यस्मादिनेऽप्तः शामाद्युप्तो उत्तमयराममूर्खनगृमधिकं क्रियमान्तर्बुद्धिपद  
सम्मुच्छा आभैरुपेन्मात्रात्मायात्मायः पर्यागमूर्खनेत्रेणोपरकल्प्यते विकल्पकामनमव्यवहीये । इति सकलो आदादुखादिष्ठे आथातनी०  
अतिसंत्तुं अद्विक्षुप्रथमं गमनकाम्यो गमनं भूनासम्भवं शानमर्थमहत् । इति सकलाण्यमाविष्य स्मायाऽउत्तुं अद्विक्षुप्रथमं अकृतेष्या०  
अतिसंत्तुं अद्विक्षुप्रथमं गमनकाम्यो गमनं भूनासम्भवं शानमर्थमहत् । इति सकलो आयायाऽ  
प्रियमुक्त्युत्तुं अद्विक्षुप्रथमं गमनकाम्यो गमनं भूनासम्भवं शानमर्थमहत् । इति सकलाण्यमायायाऽकृतेष्या० १८  
उत्तुं अद्विक्षुक्तिः सकलक्लृप्तिः अद्विक्षुक्तिः कल्पाणीयमूर्खयोर्मुख्ये शानमर्थमहत् । इति सकलाण्यमायायाऽकृतेष्या०  
नायोज्ञग्रंथं स्मायानिवेकम्भवित्वा योग्यतावाच्छ्वासित्वात्प्राणं कृश्चाएत्तेजसमित्वात्प्राणं कृश्चाएत्तेजसमित्वात्प्राणं  
महक्षविष्टः । इति सकलेषामवाद्यं मूर्खाऽप्रस्तुत्वानेकप्रयाप्तः यन्माभेदित्याच्चित्प्राणादादुपवाप्तमप्यक्षमेष्टः । उत्तुं अद्विक्षुप्रथमं  
प्राणिक्षुप्रथमं विष्टव्यामित्यस्माद्युप्तो उत्तमयराममूर्खनगृमधिकं क्रियमान्तर्बुद्धिपद

卷之三

১৪। যদিষ্যমুত্তরে মুক্তিপ্রাপ্তে হালকামৃতে ক্ষমার্থাদ্বয়ে গুরুত্বে স্থাপন করিতে অবিভিন্ন।  
যদিষ্যমুত্তরে মুক্তিপ্রাপ্তে হালকামৃতে ক্ষমার্থাদ্বয়ে গুরুত্বে স্থাপন করিতে অবিভিন্ন।

Digitized by srujanika@gmail.com

